स्पष्ट सुसमाचार संदेश

- **Zac Poonen**

इस लेख में मैं यह समझाना चाहता हूँ कि ''नया जन्म'' - या ''बचाए जाने'' का क्या अर्थ है।

इस अनुभव का पहला कदम है पश्चाताप। परंतु पश्चाताप करने (पापों से फिरने) के लिये आपको सबसे पहले यह जानना होगा कि पाप क्या है। आज पश्चाताप के विषय मसीहियों में कई झूठी समझ है, क्योंकि पाप के विषय ही समझ झूठी है।

पिछले कुछ दशकों में मसीहत का स्तर काफी प्रमाण में गिर चुका है। कई प्रचारकों द्वारा ''सुसमाचार'' का प्रचार सत्य का मिश्रित रूपांतर है। लोगों को केवल यीशु पर विश्वास करने के लिये कहा जाता है। परंतु केवल यीशु पर विश्वास कर लेने से कोई व्यक्ति बच नहीं जाता, जब तक वह पश्चाताप न करे।

नया जन्म लेना मसीही जीवन की बुनियाद है। यदि आप इस बुनियाद को डाले बिना एक अच्छा जीवन जीएंगे, तो आपकी मसीहत संसार के अन्य धर्मों के समान होगी - जो उन लोगों को भी अच्छा जीवन जीने की शिक्षा देते हैं। हमें निश्चित रूप से अच्छा जीवन जीना चाहिये। परंतु यह मसीहत का उत्कर्ष ढांचा ही होगा - उसकी बुनियाद नहीं। बुनियाद है नया जन्म लेना। हम सभी की शुरुवात वहीं से होना चाहिये।

''फिर से जन्म लेना'' इस अभिव्यक्ति का उपयोग यीशु ने यूहन्ना ३:३ में किया जब वह नीकुदेमुस से बातें कर रहा थ जो एक धार्मिक अगुवा, परमेश्वर का भय मानने वाला धर्मी व्यक्ति था। तब भी यीशु ने उससे कहा, ''यदि कोई नए सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता'' (यूहन्ना ३:३)। इस प्रकार हम देखते है कि यद्यपि आप एक भले व्यक्ति होंगे परंतु परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिये आपको एक आत्मिक जन्म लेने की जरूरत होगी। तब यीशु ने उससे कहा कि वह (यीशु) मरने के लिये क्रूस पर चढ़ाया जाएगा और जो उस पर विश्वास करेंगे, वे अनंत जीवन पाएंगे (यूहन्ना ३:१४,१६)।

यीशु ने उसे यह भी बताया कि लोगों ने अंधकार को ज्योति से अधिक प्रिय जाना क्योंकि उनके काम बुरे थे (यूहन्ना ३:१६)। परंतु जो सत्य पर चलते हैं, वे ज्योति में आएंगे और बचाए जाएंगे (यूहन्ना ३:२१)। नया जन्म लेने के लिये आपको ज्योति में आना होगा। इसका मतलब परमेश्वर के साथ ईमानदार और उसके सामने अपने पापों को मान लेना। ज़ाहिर है कि आप किये गए सभी पापों को याद नहीं रख सकते। परंतु आपको यह तो मानना ही होगा कि आप एक पापी हैं, और जिन पापों को आप याद कर सकते हैं, उन्हें परमेश्वर के समक्ष स्वीकार करें।

पाप एक बहुत बड़ी बात है और आप अपने जीवन में सर्वप्रथम उसके एक भाग को ही देख सकते हैं। यह ठीक वैसा ही है जैसे आप एक बहुत बड़े देश में रहते हैं और आपने उसके एक छोटे से भाग को ही देखा है। परंतु जैसे ही आप ज्ञात पापों से फिरते हैं, आप धीरे-धीरे पाप के पूरे देश को भी जान पाएंगे। जब आप ज्योति में चलना शुरू करेंगे, आप अपने और अधिक पापों को देख पाएंगे - और तब आप स्वयं को उससे अधिकाधिक शुद्ध कर पाएंगे। इसलिये आपको हमेशा ही परमेश्वर के समक्ष ईमानदारी से चलना चाहिये।

एक और उदाहरणः आप एक ऐसे घर में रहते है जिसमें कई गंदे कमरे है। आप चाहते हैं कि प्रभु यीश आपके साथ आकर उस घर में रहे। परंतु वह गंदे कमरों में नहीं रह सकता। इसलिये वह एक के बाद एक कमरे को साफ करने में आपकी मदद करता है। थोड़ा-थोड़ा करके पूरा घर साफ कर लिया गया है। इसी प्रकार हम मसीही जीवन में पवित्रता में बढ़ते जाते हैं।

एक बार पौलुस प्रेरित ने कहा कि वह जहाँ भी गया उसने हर किसी को वही सुसमाचार सुनाया : परमेश्वर की ओर मन फिराना और हमारे प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करना (प्रेरितों के काम २०:२०)। आपके जीवन में एक अच्छी बुनियाद डालने और नया जन्म लेने के लिये ये दो बातें ज़रूरी हैं। परमेश्वर ने पश्चाताप और विश्वास को साथ जोड़ा है। परंतु अधिकांश मसीही प्रचारकों ने उन्हें अलग कर दिया है। आजकल के सुसमाचार प्रचार में पश्चाताप को छोड़ दिया जाता है। अधिकांश लोगों द्वारा केवल विश्वास का ही प्रचार किया जाता है।

परंतु यदि अगर आपके पास केवल विश्वास हो, तो आप नया जन्म नहीं पा सकते। यह उसी कहावत के समान है कि एक महिला अपने आप ही बच्चे को जन्म नहीं दे सकती चाहे वह कितनी भी कठिन कोशिश क्यों न कर ले। एक पुरुष भी अकेले बच्चा नहीं पा सकता। एक बच्चे के जन्म के लिये एक पुरुष और एक स्त्री को मिलन करना ही होता है। उसी

प्रकार, जब पश्चाताप और विश्वास एक साथ मिल जाते हैं, एक आत्मिक बालक उत्पन्न होता है - जिससे आपकी आत्मा मे ंनया जन्म होता है। यह आत्मिक जन्म शारीरिक जन्म के समान ही वास्तविक होता है - और यह एक क्षण में हो जाता है। यह जन्म धीरे-धीरे नहीं होता।

नए जन्म के लिये महिनों की तैयारी हो सकती हैं - ठीक उसी प्रकार जैसे शारीरिक जन्म के लिये कई महिनों की तैयारी होती है। परंतु नया जन्म (शारीरिक जन्म के समान) एक क्षण में ही हो जाता है। कुछ मसीही उनके नए जन्म की तारीख नहीं जानते। मैं भी अपने नए जन्म की तारीख नहीं जानता। परंतु यह ठीक उसी प्रकार है जैसे एक व्यक्ति अपने जन्म की तारीख नहीं जानता। यह कोई गंभीर बात नहीं है - तब जब कोई व्यक्ति ज़िंदा ही होता हो!! उसी प्रकार यह महत्वपूर्ण बात निश्चित रूप से जानना है कि आप मसीह में आज जीवित हैं।

क्या हम उस समय संकीर्ण विचार के होते हैं जब हम यह कहते हैं कि परमेश्वर तक पहुँचने का मार्ग केवल यीशु ही है?

इसका उत्तर मैं आपको एक उदाहरण द्वारा देना चाहता हूँ : कोई व्यक्ति जिसने मेरे पिता को कभी नहीं देखा है (या उनका फोटो भी नहीं) वह यह नहीं जान सकता कि मेरे पिता कैसे दिखते हैं। उसी प्रकार हम भी जिन्होंने परमेश्वर को कभी नहीं देखा उसके विषय या उसके पास पहुँचने का मार्ग नहीं जान सकते। परंतु यीशु मसीह परमेश्वर की ओर से आया। इसलिये केवल वही है जो हमें परमेश्वर के पास जाने का मार्ग बता सकता है। उसने कहा, ''मार्ग मैं ही हूँ। बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता'' (यूहन्ना १४:६)।

जब हम यीशु के दावे के विषय सोचते हैं कि परमेश्वर पिता के पास पहुँचने का वही एक मार्ग है, तो हमें यह कहना होगा कि या तो उसने जो कहा वही सच है या वह झूठा और धोखेबाज था। यह कहने की हिम्मत कौन कर सकता है कि वह झूठा और धोखा देने वाला था? केवल इतना ही कह देना काफी नहीं होगा कि वह (यीशु) मात्र एक अच्छा व्यक्ति या भविष्यद्वक्ता था। नहीं। वह स्वयं परमेश्वर है - मात्र एक अच्छा व्यक्ति नहीं। यदि वह झूठा और धोखा देने वाला होता तो संभवतः वह अच्छा व्यक्ति नहीं रहा होता! इसलिये हम अंत में यह निष्कर्श निकाल सकते हैं कि यीशु मनुष्य के रूप में सचमुच परमेश्वर था।

सभी सत्य संकीर्ण विचार के है। गणित में २+२ हमेशा ४ होते हैं। हम ३ या ५ को भी संभवित उत्तर मान लेने वाले ज्यादा समझदार नहीं बन सकते। यहाँ तक कि हम ३.९९९९ को भी उत्तर स्वीकार नहीं कर सकते। यदि हम सत्य के ऐसे कमी घटी को भी स्वीकार कर लें तो हमारे गणित के हिसाब गलत हो जाएंगे। उसी प्रकार हम जानते हैं कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है। यदि हम कुछ ''ज्यादा ही समझ वाले'' होने की सोच लें और किसी ऐसी धारणा (सिद्धांत) को स्वीकार कर लें जो यह कहता हो कि सूर्य भी पृथ्वी के चारों ओर घूमता है, तो हमारे खगोलशास्त्र के हिसाब गलत हो जाएंगे! उसी प्रकार रसायन शास्त्र में H_2O पानी होता है। हम ज्यादा समझ वाले होकर यह नहीं कह सकते कि H_2O नमक भी होता है!! इस प्रकार हम देखते है कि सत्य हर क्षेत्र में संपूर्ण होता है। ज्यादा समझदारी गणित, खगोलशास्त्र और रसायनशास्त्र में गंभीर त्रृटियाँ ला सकते हैं - और परमेश्वर की सच्चाई को भी जानने के विषय गलती हो सकती है।

बायबल सिखाती है कि सभी मनुष्य पापी हैं - और यीशु पापियों के लिये मरा। इसलिये यदि आप यीशु के पास एक ''मसीही'' के समान बनकर जाएंगे, तो वह आपके पापों को क्षमा नहीं करेगा क्योंकि वह मसीहियों के लिये नहीं मरा! वह पापियों के लिये मरा। केवल वही व्यक्ति क्षमा प्राप्त कर सकता है जो यीशु के पास आकर कहता है, ''प्रभु मैं एक पापी हूँ।'' आप यीशु के पास किसी धर्म के सदस्य के रूप में आकर क्षमा नहीं प्राप्त कर सकते, क्योंकि वह पापियों के लिये मरा। यदि आप उसके पास एक पापी के समान आएंगे तब आपके पाप तुरंत क्षमा किये जाएंगे।

हम सब के लिये यह जानना आसान है कि हम पापी हैं - क्योंकि परमेश्वर ने हमें विवेक दिया है। बच्चों का विवेक अति संवेदनशील होता है जो उन्हें किसी गलत बात के विषय जल्द ही सचेत कर देता है। परंतु जब वे बड़े होते हैं, वह विवेक कठोर और असंवेदनशील बन सकता है। जब कोई ३ वर्ष का बच्चा झूठ बोलता है, उसका चेहरा दोषी दिख पड़ता है क्योंकि उसका विवेक दोषी होता है। परंतु १५ वर्षों बाद वह स्थिर हावभाव के साथ झूठ बोल सकता है क्योंकि उसने लगातार विवेक की आवाज को अनसुनी करने के द्वारा अपने विवेक को मार डाला है। शिशु के पैर के तलवे इतने नर्म होते हैं कि वे पंख के स्पर्श को भी महसूस कर सकते हैं। परंतु सयाने लोगों के तलवे इतने कड़े होते हैं कि वे एक पिन की चुभन को भी महसूस नहीं करते जब तक कि उसे दबा कर घुसाया न जाए। यही उनके विवेक को भी होता है जब वे बड़े होते जाते है।

विवेक वह आवाज़ है जिसे परमेश्वर ने हमारे भीतर बसाया है, जो हमें यह बताता है कि हम सदाचारी प्राणी हैं। यह हमें सही और गलत का प्रारंभिक .....समझ देता है। और इसलिये यह परमेश्वर की ओर से दिया गया अद्भुत वरदान है। यीशु ने इसे ''हृदय की आंख'' कहा (लूका ११:३४)। यदि हम इस ''आंख'' को संभाल कर सुरक्षित न रखें तो एक दिन

हम आत्मिक अंधे हो जाएंगे। विवेक की चुभन को नज़रअंदाज करना उतना ही खतरनाक हो सकता है, जितना कि आपकी आखों में घुसते हुए धूल के कणो को नज़र अंदाज़ करना - एक दिन आप आत्मिक रीति से पूरी तरह अंधे बन जाएंगे।

जब शिशुओं का जन्म होता है उनमें से किसी का भी कोई धर्म नहीं होता। वे सब एक समान होते हैं। दो वर्ष पश्चात भी वे वैसे ही होते है - स्वार्थी और झगड़ालू। परंतु जैसे-जैसे समय बीतता है, उनके माता-पिता उनमें विभिन्न धर्मों का मतारोपण कर देते है - और इस तरह वे विभिन्न धर्मों में बँट जाते है। ९० प्रतिशत से ज्यादा मामलों में किसी व्यक्ति का धर्म वही होता है जो उसके माता-पिता उसके लिये चुनते हैं।

परंतु परमेश्वर हमें विभिन्न धर्मों के लोगों की तरह नहीं देखता। वह हम सब को पापियों की तरह देखता है। यीशु स्वर्ग से पृथ्वी पर समस्त मानवजाति के पापों के लिये प्राण देने के लिये आया। वह उनके लिये नहीं आया जो स्वयं को परमेश्वर की उपस्थिती में प्रवेश करने के लिये स्वयं को अति योग्य समझते हैं, परंतु उनके लिये आया जो यह मान लेते हैं कि वे पापी हैं और परमेश्वर की उपस्थिति में जाने के योग्य नहीं हैं। आपका विवेक आपको बताता है कि आप एक पापी हैं। इसलिये यीशु के पास आकर यह कहना कठिन क्यों हो कि, ''प्रभु, मैं एक पापी हूँ, मैंने मेरे जीवन में बहुत सी गलत बातें की है''?

एक प्रश्न कोई यह पूछ सकता है कि, ''क्या एक अच्छा परमेश्वर हमारे पापों को नज़रअंदाज करके हमें माफ नहीं कर सकता, ठीक वैसे ही जैसे एक पिता करता है?'' यदि कोई पुत्र कुछ महंगी वस्तु को तोड़ डाले (या खो दे) और उसके विषय दुखी हुआ रहा हो और उसके पिता से माफी मांगा हो तो उसका पिता उसे माफ कर देगा। परंतु ये मामले नैतिक मुद्दे नहीं हैं। यदि हमारे सभी पाप इन मामलों के समान होते, तो परमेश्वर हमें तुरंत क्षमा कर देता। परंतु, पाप इन मामलों की तरह नहीं होता। पाप एक गुनाह है।

यदि एक व्यक्ति न्यायालय में न्यायाधीश हो और उसके सामने उसका ही बेटा खड़ा हो जिस पर किसी गुनाह का आरोप लगाया गया हो तो क्या वह अपने बेटे से यह कह सकता है, ''बेटा मैं तुझ से प्रेम करता हूँ। मैं तुझे क्षमा करता हूँ। मैं तुझे सजा नहीं दूंगा?'' एक संसारिक न्यायाधीश जिसे न्याय की थोड़ी सी भी अनुभूति हो कभी ऐसा नहीं करेगा। न्याय की यह अनुभूति जो हम सभी को होती है सर्वशक्तिमान परमेश्वर के सिद्ध न्याय का एक छोटा सा भाग है, जिसकी स्वरूपता में हम बनाए गए है। इसलिये जब हम कुछ गंभीर गलती करते हैं, परमेश्वर न्यायाधीश होता है और हमसे यह कहेगा, 'मैं तुझसे बहुत प्रेम करता हूँ; परंतु, तूने एक गुनाह किया है - इसलिये मुझे तुझे सजा देना होगा।'' उस न्यायालय में, चाहे पुत्र उसके गुनाह के लिये कितना भी खेद प्रगट करे, न्यायाधीश होने के कारण उसके पिता को उसे सजा देना होगा। आइये हम मान लेते हैं कि लड़के ने एक बैंक को लूटा था। पिता कानून के अनुसार उसे दस लाख रुपये का जुर्माना भरने की सजा देता है। चूंकि लड़के के पास दंड की यह राशि भरने के लिये पैसे नहीं हैं, उसे जेल जाना होगा। तब पिता न्यायाधीश की कुर्सी से उतरकर नीचे आता है, न्यायाधीश का चोगा उतारता है और फिर नीचे आ जाता है। वह उसकी व्यक्तिगत चेक बुक निकालता है और दस लाख रुपयों को चेक लिखता है (जो उसके जीवनभर की बचत है) और अपने बेटे को वह चेक देता है कि वह दंड की राशि का भुगतान करे। क्या उसका बेटा उस पर अब उसे प्यार न करने का दोष लगा सकता है? नहीं। साथ ही साथ कोई उसे न्यायाधीश का कर्तव्य पूरा न करने का दोषी भी नहीं ठहरा सकता, क्योंकि कानून के मुताबिक उसने अपने बेटे को पूरी सजा सुनाया था। ठीक यही बात परमेश्वर ने हमारे लिये भी किया। एक न्यायाधीश होने के नाते उसने यह घोषित किया कि हम सब को अपने पापों के लिये मरना होगा। फिर वह एक मनुष्य के रूप में उतर आया और वह सजा स्वयं ले लिया।

बायबल हमें सिखाती है कि यद्यपि परमेश्वर एक है, वह तीन व्यक्तित्व में अस्तित्व रखता है - पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा। यदि परमेश्वर मात्र एक ही व्यक्ति होता, स्वर्ग में वह अपने सिंहासन को छोड़कर पृथ्वी पर नहीं उतर सका होता और यीशु के व्यक्तित्व को धारण नहीं किया होता। फिर विश्व को कौन नियंत्रित किया होता? परंतु, चूंकि परमेश्वर तीन व्यक्तित्वों में विद्यमान है, पुत्र पृथ्वी पर आ सका, और उसके पिता जो स्वर्ग में न्यायाधीश है उसके सामने हमारे पापों के लिये मर सका। कुछ मसीही लोगों को ''केवल यीशु'' के नाम में बप्तिस्मा देते हैं यह कहते हुए कि परमेश्वरत्व मे ंकेवल एक ही व्यक्ति है - यीशु। यह एक गंभीर गलती है। १ यूहन्ना २:२२ कहती है कि जो कोई पिता और पुत्र का इन्कार करता है उसमें ख्रीष्ट विरोधी की आत्मा है। क्योंकि ऐसा करने से वह यह इन्कार करता है कि परमेश्वर पुत्र यीशु मसीह के रूप में आया, और उसकी मानवीय इच्छा का इन्कार किया, पिता की इच्छा को पूरी किया और फिर हमारे पापों की सजा परमेश्वर पिता के सामने खुद ले लिया (१ यूहन्ना ४:२,३)।

यीशु जब पृथ्वी पर आया तब वह पूरी तरह परमेश्वर और पूरी तरह मनुष्य था। जब वह क्रूस पर मरा, उसने समस्त मानवजाति के पापों की सजा स्वयं ले लिया। हमारे पापों की सजा परमेश्वर से सदाकाल के लिये अलग किया जाना है। और जब यीशु क्रूस पर लटकाया गया, वह स्वर्ग मे ंउसके पिता से अलग किया गया। इस प्रकार का अलगाव बहुत भयानक क्लेश है जिसे कोई मनुष्य कभी अनुभव कर सके।

विश्व में नर्क ऐसी जगह है जिसे परमेश्वर ने छोड़ा है। परमेश्वर वहाँ नहीं है। और इसलिये नर्क में सभी बुराईयाँ शैतान द्वारा प्रगट होती हैं। वह बुराई उन लोगों की स्थिति को भयावह बना देती है जो नर्क में जाते हैं। यीशु ने उस सजा का अनुभव किया जब वह क्रूस पर लटकाया गया था। वह क्रूस पर ६ घंटे तक लटका रहा। परंतु आखिरी ३ घंटे वह परमेश्वर द्वारा त्याग दिया गया था। सूर्य में अंधियारा छा गया और धरती डोल रही थी। स्वर्ग में उसके पिता के साथ उसका संबंध टूट चुका था। पिता मसीह का सिर है (१ कुरि ११:३) और जब मसीह को छोड़ दिया गया था, यह उसके सिर को अलग करने के समान था। हम उस क्लेश को पूरी तरह नहीं समझ सकते जो उसने सहा था।

यदि यीशु मात्र एक सृजा गया प्राणी होता तो संभवतः हजारों लोगों के पापों की सजा को, जो आदम के समय से रहे थे, अपने ऊपर नहीं ले सका होता। क्योंकि एक अब्ज कातिलों के लिये केवल एक ही मनुष्य को ही क्रूस पर नहीं चढ़ाया जा सकता! परंतु यीशु वह सजा इसलिये ले सका क्योंकि वह अनंत परमेश्वर है।

चूंकि वह अनंत है, वह अनंतकाल की सजा ३ घंटो में ले सका।

यदि यीशु परमेश्वर न होता, और परमेश्वर उसे हमारे पापों के कारण दंडित करता तो यह बड़े अन्याय की बात होती। परमेश्वर एक व्यक्ति के गुनाह के कारण दूसरे को सजा नहीं दे सकता, यद्यपि वह व्यक्ति उस गुनहगार की सजा लेने के लिये तैयार हो तौभी। आपका मित्र आपकी सजा नहीं ले सकता और आपके स्थान पर लटकाया नहीं जा सकता। वह तो अन्याय होगा। इसलिये यदि यीशु मात्र एक निर्मित प्राणी होता, और हमारे पापों के लिये दंडित किया गया होता तो यह बड़ा अन्याय हुआ होता।

इसलिये यह स्पष्ट है कि कोई भी निर्मित प्राणी शायद हमारी सजा नहीं उठा सकता था। केवल परमेश्वर ही वह सजा ले सकता था, क्योंकि वह सृष्टि का न्यायकर्ता है। उसे हमें सजा देने का अधिकार है - उसे हमारी सजा स्वयं पर लेने का भी अधिकार है। और जब वह यीशु मसीह के व्यक्तित्व में इस पृथ्वी पर आया तो उसने यही किया।

मसीही जीवन की बुनियाद दो महान सत्यों पर आधारित है : पहली कि मसीह समस्त मानव जाति के पापों के लिये मरा। दूसरी कि वह ३ दिनों पश्चात् मृतकों में से जी उठा।

यदि मसीह मृतकों में से जी न उठा होता तो कोई प्रमाण नहीं रहा होता कि वह परमेश्वर है। मृतकों में से उसका जी उठना यह प्रमाण था कि जो कुछ उसने कहा था वह सत्य था। किसी भी धार्मिक अगुवे ने कभी ऐसा नहीं कहा कि वह संसार के पापों के लिये मर सकता है। और कोई भी धार्मिक अगुवा कभी मृतकों में से जी नहीं उठा। यही दो वास्तविकताएं यीशु मसीह को अनोखा (अद्वितीय) बनाती हैं।

सभी धर्म हमें दूसरों की भलाई करने की तथा शान्ति का जीवन जीने की शिक्षा देते है। परन्तु, मसीही विश्वास तो अद्वितीय नीव है : *यीशु मसीह हमारे पापों के लिये मरा और मृतकों में से जी उठा।* यदि यह वास्तविकताएं मसीहत में से निकाली जाएं तो मसीहत अन्य धर्मों जैसी होगी। यही दो वास्तविकताएं मसीहत को अनोखा बनाती है।

हम सब परमेश्वर द्वारा उसके लिये जीने के लिये बनाए गये थे। परंतु हम सब अपने लिये ही जीते हैं। इसलिये जब हम परमेश्वर के पास आते हैं हमें पश्चातापी चोर के समान आना चाहिये जिसने उन वर्षों को चुराया था जिन पर परमेश्वर का अधिकार था। हमें उसके पास, मसीह की हमारे लिये मृत्यु का धन्यवाद करते हुए आना चाहिये और यह विश्वास करना चाहिये कि वह मृतकों में से जी उठा है और आज भी वह जीवित है। परंतु क्योंकि यीशु मृतकों में से जी उठा है, हम उसके साथ एक हो सकते हैं। उससे बातचीत कर सकते हैं। जब यीशु मृतकों में से जी उठा, वह स्वर्ग पर चढ़ गया। तब पवित्र आत्मा जो परमेश्वरत्व का तीसरा व्यक्ति है पृथ्वी पर आया। पवित्र आत्मा यीशु के समान ही एक वास्तविक व्यक्ति है। वह पृथ्वी पर इसलिये आया कि हमारे जीवनों को उसकी उपस्थिती से भर दे। यदि हम स्वयं को पवित्र आत्मा के अधीन सौंप दें तो वह हमें भी पवित्र बना देगा। जब पवित्र आत्मा आपको उसकी उपस्थिति से भर देता है तो आप पाप के ऊपर एक विजयी जीवन को जी सकने में सक्षम हो जाते हैं। पेन्तिकोस्त के दिन पवित्र आत्मा के आने के पहले कोई भी व्यक्ति ऐसा जीवन नहीं जीया था। उसके पहले लोग केवल उनके बाह्य जीवन में ही सुधार कर सकते थे। उनके आंतरिक जीवन पाप द्वारा हराए हुए और अपरिवर्तित थे। जब पवित्र आत्मा आपके भीतर अपनी उपस्थिति को भर देता है तब परमेश्वर स्वयं आपके भीतर वास करता हैं और भीतर से भी धर्मी जीवन जीने के लिये आपकी सहायता करता है।

सुसमाचार का अनोखा संदेश यह है कि जब परमेश्वर आपको क्षमा करता है तब आप पूरी तरह शुद्ध हो सकते हैं और मसीह उसकी आत्मा द्वारा आपमें रहते हुए आपके शरीर को परमेश्वर का घर बना सकता है।

एक बार मैं एक मसीही से बात कर रहा था जो सिगरेट पी रहा था। मैंने उससे पूछा कि क्या उसने कभी चर्च के भीतर भी सिगरेट पीया है? उसने कहा कि वह कभी ऐसा नहीं करेगा क्योंकि चर्च की इमारत परमेश्वर का घर है। मैंने उसे बताया कि उसका शरीर ही परमेश्वर का घर है चर्च की वह इमारत नहीं। आप कभी चर्च की इमारत के भीतर व्यभिचार नहीं कर सकते, क्या ऐसा कर सकते है? न ही आप चर्च की इमारत के भीतर अश्लील बातों को इंटरनेट द्वारा देख सकते।

जब मसीह आपके अंदर वास करता है तब आपका शरीर परमेश्वर का घर होता है। इसलिये
सावधान रहें कि आप अपने शरीर के अंगों का कैसा उपयोग करते हैं। धुम्रपान, शराब पीना, नुकसानदेह मादक पदार्थों का सेवन और अपने मन में अपवित्र विचारों को आने देने की अनुमति जैसी बुरी आदतें धीरे-धीरे आपके शरीर और विचारों को नष्ट कर देंगी।

मसीही जीवन एक दौड़ के समान है। जब हम पाप से मुड़ते है और नया जन्म पाते है तब हम इस दौड़ की शुरूवातकी बिंदु रेखा पर आते हैं। तब एक मैराथॉन दौड़ शुरू होती है - हमारे जीवन के अंत तक की दौड़। हम दौड़ते, और दौड़ते और दौड़ते चले जाते हैं। और प्रतिदिन हम गंतव्य रेखा के नज़दीक और नज़दीक होते जाते हैं। परंतु हमें दौड़ना छोड़ना नहीं चाहिये।

या एक और उदाहरण : जब हम नया जन्म पा लेते हैं, हम हमारे घर की बुनियाद डालते हैं। उसके पश्चात् हम धीरे धीरे विशिष्ट ढ़ांचे को बनाते हैं - और इसमें कई मंजिलें होती हैं।

यह सर्वोत्तम जीवन होता है जिसे आप सभी जी सकते हैं, क्योंकि आप धीरे-धीरे अपने जीवन की बुराईयों को खत्म करते जाते हैं और हर वर्ष परमेश्वर के स्वरूप बनते जाते हैं।

तो नया जन्म पाने के लिये आपको क्या करना चाहिये?

सर्वप्रथम, यह मान लें कि आप एक पापी हैं। दूसरों के साथ स्वयं की तुलना न करें और इस कल्पना से शांति न पाएं कि आप दूसरों से बेहतर हैं। पाप एक घातक जानलेवा विष है। चाहे आप एक बूंद पीएं या सौ बूंद पीएं, आप हर हाल में मर जाएंगे। इसलिये यदि आप अपने मसीही जीवन में अच्छी शुरुवात करना चाहते हैं तो यह मान लें कि आप संसार के सबसे बुरे पापी से बेहतर नहीं हैं। फिर आप अपने जीवन के सभी ज्ञात पापों से फिरने का निर्णय लें।

फिर मसीह पर विश्वास करें। अर्थात स्वयं को मसीह के अधीन करना - और मात्र उसके विषय अपने विचारों में कुछ विश्वास कर लेना ही नहीं। आप किसी पर स्वयं को उसके अधीन किये बिना विश्वास कर सकते हैं। एक दुल्हन को उसके विवाह के समय पूछा जाता है, ''क्या आप स्वयं को इस पुरुष के लिये समर्पित (अधीन) करना चाहती हो?'' मान लीजिये कि वह इस प्रकार जवाब देगी, ''मैं यह विश्वास करती हूँ कि यह एक अच्छा व्यक्ति है। परंतु मैं निश्चित रूप से यह नहीं कर सकती कि मैं उसे अपना पूरा जीवन और भविष्य समर्पित कर पाऊंगी या नहीं।'' तब तो वह उस पुरुष से विवाह नहीं कर सकती क्योंकि वह उस व्यक्ति पर विश्वास नहीं करती। जब एक जवान स्त्री विवाह करती है तब उसके संपूर्ण जीवन की दिशा बदल जाती है। वह अपने अंतिम नाम को पुरुष के अंतिम नाम से बदल लेती है। वह अपने माता पिता का घर छोड़कर अपने पति के साथ रहने के लिये चली जाती है। वह नहीं जानती कि वह कहाँ रहेगी, परंतु वह अपना संपूर्ण भविष्य उसके हवाले कर देती है। उसे उस व्यक्ति पर विश्वास (भरोसा) होता है। मसीह पर विश्वास करने का यही चित्रण है।

शब्द ''मसीही'' (आदरयुक्त तरीके से कहें तो) का अर्थ होता है ''मिसेस मसीह''। मेरी पत्नी मेरे नाम का उपयोग तब कर सकी जब उसने मुझसे विवाह की। ठीक उसी प्रकार आप मसीह का नाम तब ले सकते हैं और स्वयं को मसीही कहला सकते हैं जब आपका उसके साथ विवाह हुआ हो। यदि कोई महिला मुझसे विवाह किये बिना ही मेरा नाम लेती और स्वयं को ''मिसेस जॅक पूनेन'' कहती, तो यह एक झूठी बात होगी। उसी प्रकार कोई भी व्यक्ति जो मसीह से विवाह किये बिना स्वयं को मसीही कहलवाए, झूठ बोलता/बोलती है।

विवाह हमेशा के लिये होता है, कुछ दिनों के लिये नहीं। उसी प्रकार एक मसीही होना भी जीवन भर का समर्पण है। मसीह के प्रति संपूर्ण समर्पण का अर्थ यह नहीं कि आप पूरी तरह सिद्ध हो चुके हैं। जब कोई स्त्री विवाह करती है तो वह यह प्रतिज्ञा नहीं करती कि वह उसके जीवन में कभी गलती नहीं करेगी। वह कई गलतियाँ करेगी परंतु उसका पति उसे माफ कर देगा। परंतु वह यह प्रतिज्ञा करती है कि वह उसके पति के साथ हमेशा रहेगी। मसीह के साथ हमारे संबंध का भी यही चित्रण है।

अगला कदम जो आपको उठाना है वह है बप्तिस्मा लेना जो आपके लिये आवश्यक है। बप्तिस्मा लेना एक विवाह का प्रमाण पत्र लेने के समान है। आप मात्र विवाह प्रमाणपत्र लेकर विवाहित नहीं हो सकते। न ही केवल बप्तिस्मा लेने के द्वारा आप मसीही कहला सकते हैं। यह केवल तब ही हो सकता है जब आप विवाह करें और तब ही प्रमाण पत्र हासिल कर सकते हैं। उसी प्रकार जब आप स्वयं को यीशु के हाथों सौंप देते हैं तब ही आप बप्तिस्मा ले सकते हैं, इसके द्वारा आप यह साक्षी देते हैं कि आपने अपना पुराना जीवन छोड़ दिया है और यीशु को अपने जीवन का प्रभु बना लिया है।

अच्छे पति और पत्नियाँ एक दूसरे से बहुत बातचीत करते हैं। इसलिये आपको भी यीशु से बातें करना चाहिये और जब वह हर रोज आपसे बायबल के द्वारा बात करे तो उसे सुनना चाहिये।

एक अच्छी पत्नी कभी ऐसा कुछ नहीं करेगी जिससे उसका पति नाराज़ हो। वह उसके साथ संगति में सब कुछ करना चाहेगी। एक सच्चा मसीही भी ऐसा कुछ नहीं करेगा जो मसीह को अप्रसन्न करता हो - जैसे ऐसा चलचित्र देखना जिसे

यीशु देखना पसंद न करे। वह ऐसा कुछ नहीं करेगा जो यीशु उसके साथ मिलकर करने को तैयार न हो।

क्या आप यह निश्चित रूप से मान सकते हैं कि आपने नया जन्म पाया है? हाँ। रोमियों ८:१६ कहती है कि जब आप नया जन्म पा लेते हैं तब परमेश्वर का पवित्र आत्मा आपकी आत्मा के साथ गवाही देगा कि आप परमेश्वर की एक संतान हैं।

यह एक अद्‌भुत जीवन है - क्योंकि हम एक ऐसे सर्वोत्तम मित्र के साथ रहते हैं जो हमें फिर कभी मिल सकता है। हम कभी अकेले नहीं होंगे क्योंकि यीशु हमारे साथ और हर जगह रहेगा। हम उससे अपनी समस्याओं के विषय बात कर सकते हैं और उससे कह सकते हैं कि उसे हल करने में हमारी सहायता करे। यह एक ऐसा जीवन है जिसमें आनंद की भरपूरी है; और जो घबराहट और डर से मुक्त है - क्योंकि हमारा भविष्य यीशु के हाथों में है।

यदि आप नया जन्म पाना चाहते हैं तो हृदय की ईमानदारी के साथ अभी प्रभु से यह कहें :

प्रभु यीशु, मैं विश्वास करता/करती हूँ कि आप परमेश्वर के पुत्र हैं। मैं एक पापी हूँ जिसकी जगह नर्क में हैं मुझसे प्रेम करने और मेरे लिये क्रूस पर मरने के लिये धन्यवाद। मैं विश्वास करता/करती हँ कि आप मृतकों में से जी उठे और आज भी जीवित हैं। मैं अपने पापी जीवन से इसी समय फिरना चाहता/चाहती हूँ।

कृपया मेरे सभी पापों के लिये मुझे क्षमा करें और पाप के प्रति मुझमें अरूचि पैदा करें। मैं हर किसी को जिसने मेरा बुरा किया है, क्षमा करता/करती हूँ। प्रभु यीशु मेरे जीवन में आएं और आज ही से मेरे जीवन का प्रभु बन जाएं। मुझे अभी परमेश्वर की संतान बना दें।''

परमेश्वर का वचन कहता है, ''जितनों ने उसे ग्रहण किया उसने उन्हें परमेश्वर की संतान होने का अधिकार दिया'' (यूहन्ना १:१२)। प्रभु यीशु कहता है, ''जो कोई मेरे पास आएगा, मैं उसे कभी न निकालूंगा'' (यूहन्ना ६:३५)

तो आप निश्चित रूप से जान सकते हैं कि उसने आपको स्वीकार कर लिया हैं।

तब आप उसे यह कहते हुए धन्यवाद दे सकते हैं, ''प्रभु यीशु मुझे क्षमा करने और ग्रहण करने के लिये धन्यवाद। कृपया मुझे अपने पवित्र आत्मा से भर दें और आपके लिये जीने हेतु सामर्थ दें। आज से मैं केवल आपको ही प्रसन्न करना चाहता/चाहती हूँ।''

अब आपको परमेश्वर का वचन हर रोज पढ़ना चाहिये ताकि वह आपको हर रोज पवित्र आत्मा से भर दे। आपको नये जन्म पाए हुए अन्य मसीहियों के साथ भी संगति करना चाहिये। इसी प्रकार से ही आप मसीही जीवन में उन्नति करेंगे और प्रभु के पीछे चलने की सामर्थ पाएंगे। इसलिये परमेश्वर से कहे कि वह आपको एक अच्छी कलीसिया में ले जाए। परमेश्वर आपको बहुतायत से आशीषित करें।

© Copyright -
This article has been copyrighted to prevent misuse. It should not be reprinted or translated without written permission from the author. Permission is however given for this article to be downloaded and printed , provided it is for FREE distribution, provided NO ALTERATIONS are made, provided the AUTHOR'S NAME AND ADDRESS are mentioned and provided this COPYRIGHT notice ["Copyright by Zac Poonen"] is included in each printout.

For further details, please contact :

CHRISTIAN FELLOWSHIP CENTRE
40 DaCosta Square,
St.Thomas Town,
Bangalore - 560 084. INDIA.

Phone : (91)-(80)-25477103
Email : cfc@cfcindia.com web : www.cfcindia.com